

केन्द्रीय गृह मंत्री शाह ने नवीन न्याय संहिताओं पर केन्द्रित भव्य प्रदर्शनी का किया शुभारंभ

नवप्रदेश/ भोपाल।
केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नवीन न्याय संहिताओं पर आधारित भव्य प्रदर्शनी का भेल दशहरा मैदान पर शुभारंभ कर प्रदर्शनी के विभिन्न ज़ोन का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी में भारतीय न्याय व्यवस्था में हुए महत्वपूर्ण बदलावों, नवीन न्याय संहिताओं के प्रावधानों तथा अपराध की सूचना प्राप्त होने से लेकर विवेचना,

फॉरेंसिक जाँच, अभियोजन, न्यायालयीन कार्यवाही और अंतिम न्याय तक की संपूर्ण प्रक्रिया को 14 अलग-अलग जोन में सजीव मॉडल, डिजिटल तकनीक, वीडियो, चार्ट एवं लाइव प्रदर्शन के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। सात अक्टूबर तक चलने वाली यह पांच दिवसीय प्रदर्शनी, नवीन न्याय संहिताओं के प्रति आम नागरिकों को जागरूक करने के उद्देश्य से केंद्रीय गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन में आयोजित की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्रीय गृह मंत्री शाह को प्रदेश में नवीन न्याय संहिताओं के क्रियान्वयन की दिशा में संचालित गतिविधियों, सायबर सुरक्षा एवं जागरूकता, मध्यप्रदेश पुलिस के सामाजिक अभियानों और नवाचारों से अवगत कराया। उद्घाटन अवसर पर वरिष्ठ विधायक एवं अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, अपर मुख्य सचिव गृह संजय शुक्ला और पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना उपस्थित थे।



आपातकालीन नंबर डायल-112 की कार्यप्रणाली का किया गया सजीव प्रदर्शन

प्रदर्शनी का जोन एक नवीन न्याय संहिताओं के परिचय पर केन्द्रित है। भारतीय न्याय संहिता , भारतीय नागरिक

सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम , 2023 के प्रमुख प्रावधानों तथा उनके व्यावहारिक उपयोग की जानकारी दी गई है। आपातकालीन सेवाओं एवं कंट्रोल रूम पर केन्द्रित जोन दो में 'एक देश, एक आपातकालीन नंबर' की अवधारणा के अंतर्गत

डायल-112 प्रणाली के एकीकरण तथा आधुनिक स्ट्रेट कमांड सेंटर की तकनीकी क्षमताओं का सजीव प्रदर्शन किया गया है। क्राइम सीन और फॉरेंसिक जाँच से संबंधित जोन-3 में अपराध स्थल के वास्तविक 3D मॉडल के माध्यम से घटनास्थल पर फॉरेंसिक टीम की भूमिका, वैज्ञानिक साक्ष्य संकलन तथा साक्ष्यों की अनिवार्य वीडियो रिकॉर्डिंग की प्रक्रिया प्रदर्शित है। जोन-4 थाना प्रणाली एवं प्रारंभिक जाँच पर केन्द्रित है। इसमें पुलिस थाने के मॉडल के माध्यम से विवेचना के प्राथमिक चरण, ई-एफआईआर, जीरो एफआईआर एवं छद्मब्रह्म से संबंधित सेवाओं और प्रक्रियाओं की जानकारी इस जोन में दी गई है। चिकित्सा सेवाओं एवं मेडिकल साक्ष्य पर समर्पित जोन-5 में पीड़ितों के उपचार, मेडिकल परीक्षण, पोस्टमार्टम तथा समयबद्ध मेडिकल रिपोर्ट के माध्यम से आपराधिक न्याय प्रणाली में स्वास्थ्य विभाग की भूमिका को दर्शाया गया है।

चार्जशीट तैयार करने से लेकर न्यायालय में प्रभावी पैरवी तक की दी गई है जानकारी

न्याय प्रक्रिया में फॉरेंसिक साइंस लैब के महत्व को जोन 6 में प्रदर्शित किया गया है। इस जोन में ड्रग, फिंगरप्रिंट, बैलैस्टिक एवं डिजिटल फॉरेंसिक जैसी वैज्ञानिक जाँच तकनीकों के माध्यम से अपराध के वैज्ञानिक अनुसंधान और साक्ष्यों की विश्वसनीयता बढ़ाने की प्रक्रिया दिखाई गई है। जोन-7 में अभियोजन की भूमिका पर केन्द्रित है।विवेचना के बाद चार्जशीट तैयार करने से लेकर न्यायालय में प्रभावी पैरवी तक अभियोजन की भूमिका और कार्यप्रणाली को यहां प्रदर्शित किया गया है। जोन-8 में जिला न्यायालय पर केन्द्रित है। इस जोन में जिला न्यायालय का मॉडल एवं न्यायालयीन कार्यवाही में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग का प्रदर्शन किया गया है।

पुलिस प्रशासन सख्त : सीईसी को हटाने की मांग को लेकर शिवाजी पार्क में हुआ था विरोध-प्रदर्शन

सीजेपी के प्रदर्शन पर आयोजकों समेत 500 लोगों पर एफआईआर

मुंबई/ए। महाराष्ट्र की आर्थिक राजधानी मुंबई में कानून-व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन अब पूरी तरह से सख्त रख अपना रहा है। हाल ही में शहर के भीतर एक बड़े प्रदर्शन के दौरान प्रशासनिक नियमों और प्रतिबंधों की अनेकखी किए जाने का मामला सामने आया है।

इस घटना के बाद पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए न केवल मुख्य आयोजकों को अपने शिकंजे में लिया है, बल्कि सैकड़ों अज्ञात लोगों के खिलाफ भी गंभीर धाराओं में मुकदमे दर्ज किए गए हैं, जिससे राजनीतिक और सामाजिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है।

यह पूरा मामला मुंबई के ऐतिहासिक और चर्चित शिवाजी पार्क का है, जहां गत 2 अक्टूबर को सीजेपी द्वारा एक विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। इस प्रदर्शन के दौरान भारी संख्या में लोग एकत्रित हुए थे। पुलिस का कहना है कि इस आयोजन के लिए तय किए गए नियमों और सुरक्षा संबंधी दिशा-निर्देशों का पालन नहीं किया गया, जिसके



सीईसी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे को लेकर दूसरे दिन भी प्रदर्शन की कोशिश, हिरासत में 150 प्रदर्शनकारी

नई दिल्ली/ए। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर शनिवार को भी राजधानी में माहौल बनाने की कोशिश की गई। हालांकि, शुक्रवार की ही तरह पुलिस और सुरक्षा बलों ने झुंझाओ बढ़ने से रोक दिया। जंतर मंतर पर प्रदर्शन की कोशिश करने पहुंचे लोगों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। वामपंथी संगठनों के आह्वान पर यह भीड़ जुटाई जा रही थी। प्रदर्शनकारियों में वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, प्रशांत भूषण, अविक साहा एवं योगेंद्र यादव समेत कई अधिवक्ता भी हुए। इस बीच उस रास्ते से गुजरने वाली आम जनता को काफी दिक्कत का



सामना करना पड़ा। शनिवार को लगभग 150 प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया, जिनमें एआईएसए राष्‍ट्रीय अध्यक्ष नेहा बोरा, कार्यकर्ता योगेंद्र यादव और वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण शामिल थे। वे पटेल चौक से जंतर मंतर की ओर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रदर्शन करने और उनके इस्तीफे की मांग को लेकर मार्च कर रहे थे। एआईएसए सदस्यों ने बताया कि वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, नित्या रामकृष्णन, पल्लव सिसोदिया और प्रशांत भूषण के साथ कार्यकर्ता योगेंद्र यादव भी बोरा और अन्य छात्रों के साथ मार्च में शामिल हुए।

आज बेबाक

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और एसआईआर के खिलाफ वैसे तो पूरे विपक्ष ने मोर्चा खोल रखा है लेकिन इंडी गठबंधन की बैठक में ममता बनर्जी अपना आधा ही खो बैठी। उन्होंने ज्ञानेश कुमार को मैनेज कुमार नाम दिया और चोर ही नहीं डाकू तक बता दिया। उनकी खीज देखकर लोगों को उस खिसयानी बिस्कि की याद आ गई जो हम्म- हम्म, रम्मा-रम्मा करते हुए खंबा नोचती है। लगता है दौदी बंगाल में अपनी हार और अपनी पार्टी के बंटोधार के सदमे से अभी तक नहीं उबरी हैं। बहरहाल फूँकी हुई कारतूस ने बासी कढ़ी में उबाल ला दिया।

गरमा-गरम

मुरफ़्त की सुरक्षा में हू, PAK आम में कमाओ...
बहाण में डेर लसक कमाइ हरिम भूसा

कश्मीर हो या क्रिकेट
बस पिटाई ही पिटाई?

एशियन गेम्स
पिता पाकिस्तान,
शान से जीता
हिंदुस्तान

भारतीय पायलट पर हमले के आरोपी का नाम आया सामने

दावा- अलकायदा से प्रभावित था, कट्टरपंथी सोच के चलते ओमान एयर से निकाला गया



दुबई/ए। इजराइल जा रही फ्लाईदुबई की फ्लाइट में भारतीय पायलट कैप्टन सिम्रत मच्छर पर हमला करने वाले को-पायलट की पहचान हमाम अल-हमामी के रूप में हुई है। वह ओमान का रहने वाला है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जांच में उसके अलकायदा की विचारधारा से प्रभावित होने के सबूत मिले हैं। पूछताछ में अल-हमामी ने बताया

कि वह विमान को इजराइल में क़ैश कराना चाहता था। हमले से पहले भी उसके रवैये पर सवाल उठे थे। 2024 में उसे कट्टरपंथी सोच के कारण ओमान की नेशनल एयरलाइन की पायलट ट्रेनिंग से हटा दिया गया था। बाद में उसे एयरलाइन में दूसरी जिम्मेदारी दी गई। करीब 8 महीने पहले वह फ्लाईदुबई से जुड़ा था।

हैदराबाद में सेना के जवानों ने चोरी किए थे हथियार, 7 गिरफ्तार

हैदराबाद/ए। हैदराबाद में आर्मी फेसिलिटी से हथियार चोरी के मामले में शनिवार को 3 सेना कर्मियों समेत 7 लोगों को गिरफ्तार किया गया। यह जानकारी मल्काजगिरी पुलिस कमिश्नर बी सुमति ने दी। इस मामले में मुख्य आरोपी तेलंगाना के नागरकुर्नूल जिले का पूर्व हवलदार उप्पुथल्ला मल्लेश है। उसे 11 सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। मल्लेश पर 30 और 31 अगस्त की दरमियानी रात बोलासम में कोटे और बटालियन मैगजीन से एके-203 अर्सल्ट राइफल और गोलियां चोरी करने का आरोप है।

युवक ने मां, नाना-नानी और बहन को उतारा मौत के घाट

अनूपपुर में हृदय विदारक घटना, हमले में 4 घायल, आरोपी गिरफ्तार

अनूपपुर/नव प्रदेश। मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले के ग्राम अमोदा बिजौरा में शनिवार को दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। जहां थाना करन पट्टर के सरई चौकी क्षेत्र में एक युवक ने लाठी-डंडे से हमला कर अपनी मां सहित नाना-नानी और मां की बेटे की हत्या कर दी। घटना में कुल 4 लोगों की मौत की सूचना है, जबकि कई लोग गंभीर रूप से घायल बताया जा रहे हैं।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार आरोपित युवक प्रेम सिंह, निवासी ग्राम मरदरी, थाना



पुलिस कर रही मामले की जांच
घटना की सूचना मिलते ही अनूपपुर एसपी सहित पुलिस का अमला मौके पर पहुंच गया। घटना स्थल पर उमरिया और अनूपपुर दोनों जिलों की पुलिस मौजूद है।

नौरोजाबाद, करीब एक सप्ताह पहले अपनी मां के साथ अपने नाना-नानी के यहां अनूपपुर जिले

रस्सी खुलते ही मचाया तांडव

रस्सी से मुक्त होते ही आरोपित ने अपनी मां पर ही हमला कर दिया। इसके बाद उसने अपने नाना सपत और नानी भन्नी पर भी लाठी-डंडे से हमला किया। हमले में तीनों की मौत हो गई। इसके बाद आरोपित ने अपने मामा जेम सिंह सहित परिवार के अन्य सदस्यों पर भी हमला कर दिया। हमले में मौनका सिंह (5 वर्ष) की भी मौत हुई है, जबकि बहन भारती और चंचल घायल हैं। सभी घायलों को उपचार के लिए शहडोल मेडिकल कालेज ले जाया गया है। वहीं सनी धाम के पंजा गंगा सिंह का भी उपचार जारी है।

लेकर आरोपित ने सनी धाम के पंख गंगा सिंह के साथ मारपीट कर दी।

होर्मुज में जहाज पर मिसाइल हमला 5 भारतीय सवार थे, सभी सुरक्षित

आठ महीने में यहां 11 भारतीय नाविकों की जान गई

मस्कट/ए। होर्मुज स्ट्रेट में शुक्रवार को एक जहाज पर मिसाइल हमला हुआ। इसमें सवार 5 भारतीय नाविकों को सुरक्षित बचा लिया गया है। ओमान में भारतीय दूतावास ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। ये नाविक कुवैत के झंडे वाले टैंकर एमटी काजिमाह आईआईआई पर सवार थे। यह कच्चे तेल से भरा था और अफ्रीका की ओर जा रहा था। हालांकि, यह हमला किसने किया, यह अभी जानकारी तक सामने नहीं आई। फरवरी से अब तक होर्मुज में हमलों में 100 से ज्यादा भारतीय नाविक प्रभावित हो चुके हैं। वहीं, इन



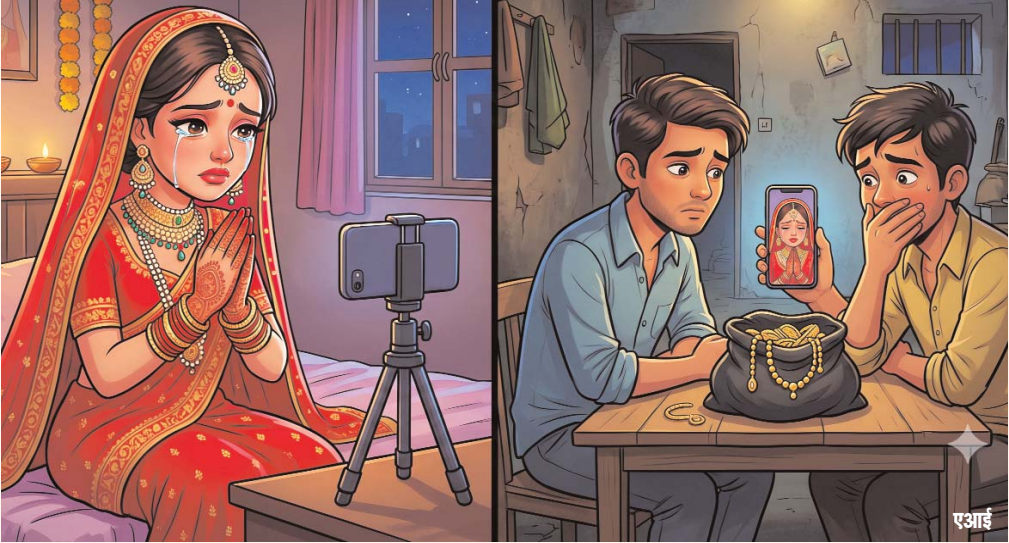
हमलों में 11 भारतीय नाविकों की जान गई।
खाड़ी क्षेत्र में जहाजों पर 4500 भारतीय नाविक: विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने इससे पहले मंगलवार को बताया था कि इस क्षेत्र में चल रहे व्यावसायिक जहाजों पर 4500 से ज्यादा भारतीय नाविक सवार हैं। जायसवाल के मुताबिक, इस समय फारस की खाड़ी में भारत के झंडे वाले 6 कर्मशर्षित जहाज हैं।

शादी के सात दिन बीत चुके थे, लेकिन घर के आँगन में अभी भी हल्दी और गेदे के फूलों की मिलीजुली महक तैर रही थी। निधि के हाथों पर रन्ची मेहदी का रंग अब गहरा होकर धीरे धीरे उतरने लगा था। वह जब भी अपने हाथों को देखती, उसे अपनी माँ की याद आ जाती। विदाई के वक्त माँ ने एक लाल रंग का महमली डिब्बा उसके हाथों में सौंपते हुए भराए गले से कहा था कि ये गहने उसकी नानी के हैं और कुछ उसकी माँ के हैं। माँ ने यह भी कहा था कि अब ये सब निधि के हैं और उसे इन्हें बहुत संभालकर रखना है क्योंकि ये सिर्फ सोने के टुकड़े नहीं बल्कि उनके परिवार की इज्जत और पीढ़ियों का आशीर्वाद हैं।

निधि ने नई नवेली दुल्हन होने की झिझक के कारण अपने ससुर जी से तिजोरी की चाबी नहीं माँगी थी। उसने सोचा कि अभी कुछ दिन वह उन गहनों को अपने कमरे की अलमारी में ही सुरक्षित रख लेगी। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। उसी रात करीब दो बजे मोहल्ले की बत्ती गुल थी। चारों तरफ सन्नाटा पसरा था। तभी एक पुरानी मोटरसाइकिल पर दो लड़के आए। उन्होंने बड़ी आसानी से घर की पिछली दीवार फँदी और खिड़की की ढीली कुंडी खोलकर अंदर घुस गए। अंधेरे में टटोलते हुए उनके हाथ वह अलमारी लगी। उन्होंने उसमें से एक भारी काला थैला निकाला और चुपचाप उसी रास्ते से फरार हो गए। उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उस थैले के अंदर क्या रखा है।

अगली सुबह जब निधि ने कोई सामान निकालने के लिए अलमारी

एक दुल्हन के आँसू



खोली, तो उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई। वह काला थैला वहीं नहीं था। उस थैले में बीस लाख से भी ज्यादा कीमत के आभूषण थे। उसमें नानी का पुराना पुरतैनी हार, माँ की शादी की चूड़ियाँ, ससुराल से मुँह दिखाई में मिला रानी हार और सबसे कीमती वह सोने का छोटा सा टीका था जिसे निधि के पिता ने अपनी पहली तनख्वाह से बहुत खोलकर अंदर घुस गए। अंधेरे में टटोलते हुए उनके हाथ वह अलमारी लगी। उन्होंने उसमें से एक भारी काला थैला निकाला और चुपचाप उसी रास्ते से फरार हो गए। उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि उस थैले के अंदर क्या रखा है।

था। उसने निधि को समझाते हुए कहा कि वह परेशान न हो, बीमा कंपनी से पैसे मिल जाएंगे या पुलिस चोरों को पकड़ लेगी। लेकिन निधि जानती थी कि थानों की फहलों में गुम हुए गहने कभी वापस नहीं लौटते। उसे गहनों के जाने से ज्यादा उस भरोसे के टूटने का दुख था जो उसकी माँ ने उस पर किया था।

निधि अंदर ही अंदर घुट रही थी। ऐसे में उसकी छोटी बहन ने उसे फेन पर सलाह दी कि वह इंटरनेट के लिए एक

वीडियो बनाए। बहन का कहना था कि आजकल सोशल मीडिया की ताकत बहुत बड़ी है और शायद इससे कुछ मदद मिल जाए। निधि ने शुरुआत में साफ मना कर दिया। उसे लगा कि लोग क्या सोचेंगे कि नई बहू इंटरनेट पर बैठकर रो रही है। लेकिन उस रात जब पूरा घर सो गया, तो निधि की आँखों से नींद कोसों दूर थी। उसे बार बार अपनी माँ का रोता हुआ चेहरा याद आ रहा था। उसने हिम्मत जुटाई और अपने मोबाइल का कैमरा चालू कर लिया। उस वीडियो में कोई दिखावा नहीं था। वह अपने शादी के जोड़े में बैठी थी, उसके मेहंदी लगे हाथ जुड़े हुए थे और आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। उसने रँधे हुए गले से कहा कि वह नहीं जानती कि वे भैया कौन हैं जो उसका थैला ले गए हैं।

असने बताया कि उस थैले में सिर्फ सोना नहीं है, बल्कि उसके मायके की यादें, नानी की निशानी और माँ की चूड़ियाँ हैं। उसने हाथ जोड़कर विनती की कि वे चाहे तो कोई और कीमती सामान रख लें, लेकिन उसकी माँ और नानी की निशानियाँ लौटा दें। यह कहते हुए वह फन्म कर रो पड़ी। उसने वीडियो को इंटरनेट पर डाल दिया और कैप्शन में लिखा कि कृपया मेरे गहने लौटा दो। पहले एक घंटे में उस वीडियो को सिर्फ सौ लोगों ने देखा। लेकिन धावनाएँ जब सच्ची होती हैं, तो वे अपनी राह खुद बना लेती हैं। धीरे धीरे वह वीडियो फैलने लगा। कुछ लोगों ने इसे नाटक कहा, लेकिन बहुत सी महिलाओं ने निधि के दर्द को अपना दर्द समझा। तीसरे दिन तक उस वीडियो को आठ लाख से ज्यादा लोग देख चुके थे और वह शहर भर में चर्चा का विषय बन गया था। उसी तीसरे दिन, शहर के दूसरे किनारे पर बनी एक कच्ची बस्ती के छोटे से कमरे में दो लड़कें बैठे थे। उनके नाम विकास और सुनील थे। दोनों की उम्र मुश्किल से बीस बाइस साल रही होगी। वे दोनों राजमिस्त्री के साथ मजदूरी का काम करते थे। लेकिन कुछ समय पहले काम बंद हो जाने के कारण वे बेरोजगार हो गए थे। विकास की माँ बहुत बीमार रहती थी और उसके इलाज के लिए पैसें की सख्त जरूरत थी। सुनील का छोटा भाई स्कूल की फीस न भर पाने के कारण पढ़ाई छोड़ चुका था। मजबूरी ने उन्हें चोरी के रास्ते पर धकेल दिया था। जब उन्होंने वह थैला खोला, तो उनकी आँखें पट्टी रह गईं। उन्होंने

अपनी पूरी जिंदगी में इतना सोना एक साथ सिर्फ सुनार की दुकान के शीशे के पीछे ही देखा था।

विकास ने गहरी साँस लेते हुए कहा कि अब उसकी माँ का इलाज किसी बड़े अस्पताल में हो जाएगा। तभी सुनील के मोबाइल पर इंटरनेट चलाते हुए अचानक निधि का वही वीडियो सामने आ गया। वीडियो में एक नई दुल्हन रो रही थी, उसके हाथ जुड़े हुए थे। सुनील की अपनी सगी बहन की शादी भी दो महीने पहले ही हुई थी। विदाई के वक्त उसकी माँ ने भी अपनी बेटी को एक छोटा सा हार देते हुए बिल्कुल यही शब्द कहे थे कि यह घर की इज्जत है। सुनील का दिल धक से रह गया। विकास ने झुंझलाते हुए कहा कि इस वीडियो को बंद कर दे क्योंकि वे चोर हैं, कोई संत महात्मा नहीं। लेकिन वीडियो बंद होने के बाद भी वह रोता हुआ चेहरा उन दोनों की आँखों के सामने बार बार आ रहा था। उस रात सुनील बिल्कुल नहीं सो सका। उसे बार बार अपनी बहन का चेहरा दिखाई दे रहा था। उसे अपनी माँ की दी हुई वह सीख याद आ रही थी कि ईंसान को भूखे मर जाना चाहिए लेकिन कभी किसी दूसरे का हक नहीं मारना चाहिए।

चौथे दिन की सुबह करीब चार बजे, जब पूरी गली गहरी नींद में सोई हुई थी, वही पुरानी मोटरसाइकिल एक बार फिर निधि के घर के सामने आकर रुकी। चेहरे पर कपड़ा बाँधे हुए उन दोनों लड़कों ने वह काला थैला चुपके से घर के मुख्य दरवाजे के अंदर फेंक दिया और बिना कोई आवाज किए वहाँ

से चले गए। सुबह जब निधि की सास ने दरवाजा खोला, तो उन्होंने देखा कि दरवाजे के पास वही काला थैला पड़ा है। थैले पर थोड़ी मिट्टी लगी थी, लेकिन वह पूरी तरह से बंद था। उन्होंने तुरंत पुलिस और पूरे परिवार को बुलाया। जब पुलिस के सामने वह थैला खोला गया, तो उसमें रखा एक एक गहना अपनी जगह पर सुरक्षित था। चोरों ने गहने की एक छोटी सी डिब्बी तक नहीं खोली थी। उस थैले के अंदर एक मुड़ा हुआ कागज का टुकड़ा भी पड़ा था। जब निधि ने उसे खोला, तो उसमें टूटे फूटे अक्षरों में लिखा था कि हमें माफ़कर दो दीदी, हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई।

यह पढ़ते ही निधि वहीं जमीन पर बैठ गई और उसके सब का बाँध टूट गया। वह फूट फूट कर रोने लगी, लेकिन यह रोना दुख का नहीं बल्कि राहत और किसी अनुजान पर विश्वास के जीत जाने का था। यह खबर जंगल की आग की तरह पूरे शहर में फैल गई। लोगों को यकीन नहीं हो रहा था कि आज के जमाने में कोई चोर इतनी बड़ी रकम वापस कर सकता है। निधि ने उसी दिन एक और वीडियो बनाया। इस बार उसके चेहरे पर आँसू नहीं बल्कि एक बहुत ही सुकून भरी मुस्कान थी। उसने हाथ जोड़कर कहा कि वह उन भाइयों को धन्यवाद देना चाहती है जिन्होंने उसके चेहरे पर आँसू नहीं बल्कि ईंसानियत पर उसका भरोसा लौटाया है। उस रात वह काला थैला तो लौटा ही, लेकिन उसके साथ यह उम्मीदी भी लौट आई कि ईंसान के अंदर का ईमान कभी पूरी तरह नहीं मरता। वह बस गरीबी और मजबूरी की धूल के नीचे दब जाता है और जब कोई सच्चे दिल से गुहार लगाता है, तो वह ईमान फिर से जाग उठता है।

त्यंग्य रचना : प्रजातंत्र की प्रयोगशाला



डॉ. किशोर अग्रवाल

उन पाँच भाइयों में एक भाई स्टूडेंट लीडर था। वे एकता पूर्वक रहते। हर झंझट और नेतागिरी में पाँचों भाई अपने प्रतिद्वंद्वियों को मिलकर मारते व पीटते थे। उनके पिता कहते कि बिना वजह झगड़ना नहीं, यह हम जैसे प्रतिष्ठितों का काम नहीं। हर काम शांति से करना चाहिए। शांति से चुपचाप निपटाने में शेर नही होता। बड़ा भाई मेधावी था। अपनी कुशाग्र बुद्धि और स्मरण शक्ति के बल पर विधायक हुआ, मंत्री हुआ और पार्टी व सी.एम. का चेहता बन गया। विधानसभा में उसके प्रश्न चमत्कृत करते थे।

जैसा कि होता है, बड़े होने पर सबके परिवार अलग-अलग रहने लगे पर आपसी हित जुड़े रहे । बड़े भाई के नाम से छोटे भाई काम कराने की धूस ले लेते। काम स्वतः ही हो जाता तो उसकी रकम रखकर न हुए काम की रकम लौटा देते। ये प्रारंभिक प्रयोग थे।शाकाहारी भी थे । इसमें मंत्रीजी को कुछ कहना नही पड़ता था। वह भाइयों की सुनते ही न थे।

उत्ते पारिवारिक सम्मेलन में चर्चा निकली कि बड़े भाई के मंत्री होने का थोड़ा बहुत लाभ ही मिल पाता है। ‘आप सुनते नहीं, आधी से अधिक रकम लौटानी पड़ती है, लोग दूसरे नेताओं से आप ही के विभाग के काम करा ले जाते हैं।’

पिता ने समझाया कि अपने हाथ में काम हो तो अपने नाम का आया पैसा दूसरे के हाथों में क्यों जावे।

पहले परचून की दुकान, ट्रांसपोर्ट ठेकेदारी, स्कूल मास्टरी जैसे कामों में लगे भाइयों को बड़े दायित्व सौंपने का विचार किया गया। अपनी कुशल राजनीति के कारण सरकार के कई विभाग बड़े भैया के पास थे। उन्होंने भाइयों में विभागों का बँटवारा कर दिया और खुद एक बड़े बंगले में अपनी धवल छवि की सुरक्षा के लिए चले गए। अब जिन अधिकारियों, ठेकेदारों, तस्करों को मंत्री जी से काम पड़ता, वे मंडियों में, स्कूलों में, और ट्रांसपोर्टों के यहाँ चक्कर काटते, पर उनके काम होने लगे।

सीधी-सच्ची व्यवस्था चलने लगी। हर दो-तीन दिन में कोई पारिवारिक/धार्मिक सम्मेलन रख दिया जाता। वहाँ एकत्र किए गए रुपयों का बँटवारा कर दिया जाता। सारे भाई उत्साह से फिर काम में लग जाते।

पिता सामाजिक कामों में और मंत्री बगुला भगत बने विधानसभा में जुझारू नेता बन कीर्ति प्राप्त करने लगे । जमींदारों के पास भी न हो उतनी जमीनं , गली-मोहल्लें में मकान , कॉलोनियों में



निवास, और बड़े भाई की पिता के साथ साझा कोठियां बहुत सी बन गईं। कौन कहता है विकास नहीं होता? होता है, विकास! यह विकास नहीं तो और क्या है? विकास घर से ही शुरू होता है। विकास को समझना पड़ता है और उसकी आदत डालनी पड़ती है। हर काम में अपने विकास की संभावना सूँघनी पड़ती है। तभी तो काम आगे बढ़ता है। काम बढ़ता है तो सबका विकास होने लगता है। अतः किसी नेता के निजी विकास को समालोचना की दृष्टि से ही देखना चाहिए कि वह लोगों के विकास का समानुपातिक है कि नहीं। यदि सरकार के विभिन्न विभागों के नेता और मंत्रीगण विकसित हो रहे हैं, ज़मीन-जायदाद, कोठियाँ और गाड़ियों से संपन्न हो रहे हैं, इसका मतलब यह है कि उनके विभाग काम कर रहे हैं, लोगों को अवसर मिल रहे हैं। वे बहुत सा रुपया कामकार अपने मंत्रियों को भी दे रहे हैं या देकर कमा रहे हैं, इससे पता चल जाता है।

सड़क, पुलिस, बिजली, स्कूल, अस्पतालों की कमी और गरीबी के पैमाने पर तरकी की जाँच करना जाहिलों का काम है। यह छोटे पत्रकारों और नये उा रहे नेताओं को राजनीति सिखाने के प्रारंभिक उपकरण हैं। ये बने रहने चाहिए, इन्हें खत्म कर देगे तो नयी पीढ़ी सीखेगी कहीं।

प्रजातंत्र में नेताओं की आवश्यकता हरदम रहती है। उन्हें सिखाने के लिए गरीब चाहिए कि नहीं चाहिए, समस्या होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए। ये ही मिट गये तो प्रजातंत्र चलाने के व्यावहारिक ज्ञान देने वाली प्रयोगशालाएँ कहीं से लाओगे।

नयी विचारधाराएँ, नये नेता, नये प्रयोग – ये सब आम जनता की अंतहीन समस्याओं और गुरबत में ही संभव हैं। नयी दवाओं और नये डॉक्टरों की प्रारंभिक सिखलाई जैसे नये प्रयोग आम जनता में ही करके उन पर दवाओं के रिक्शन और मृत्यु दर के अनुपात में ही पकड़े डॉक्टर मिलते हैं, वैसे ही प्रजातंत्र को और उसके मंदिर को चलाने के मजबूत कंधे इसी गरीबी और समस्याओं की व्यायामशालाओं में तैयार होते हैं।



एक गोड में लाल भाजी,

एक गोड में महुदर,

कतेक ला मानव,

मंय देवर ससुर!

फुाड़ी रे फम फय

हां हां फाड़ी रे फय फय

(छत्तीसगढ़ी लोक परंपरिक गीत)

- ए जी।

- हां जी।

- ओ जी...।

- हां जी, गोठिया ना।

- मोर एक उन बात हे।

- का बात हे...?

- सुनबे ना, मानबे ना...?

- काबर नइ सुनहु, काबर नइ मानहु?

- गउकिन सही काहत हस, लबारी, अउ

झूठ-मूठ के तो नइ काहत हस?

- आज तक लबारी मारे हैं का तोर करा?

- नहीं तुंहर मरद जाति के कोनो कांही भरोसा नइहे?

- अच्छ... मरद मन अनभरोसिल होथन

अउ तुमन साखत सत्यवान सावित्री कस होथन वा?

- टार भई तोर एती ओती के बात ला...।

- मोर लेखे अभी टार, रामकथा ला मंय

नहीं तउ शुरू करे हस।

- अच्छ बवा, मंयं शुरू करे हैं ना, बस।

- हां तब बता तंय कुछ पूछत रेहे?

- अई हां, सिरतोन काहत हस, जेन बात ला

पूछिहों काहत रेहेव तेन ला कइसे भुलागेव?

कतेक सुरतभूल होवत जाथी ना?

- तोर ला तंय जान, बने बादाम, काजू,

अखरोट खाय कर रोज समझे।

- हां तब का पूछत रेहेव... हां... हां... सुरता आगे।

- हां आगे ना सुरता, तब पूछ।

- मोर एक उन बात ला मानबे?

- माने के लइक होही तब काबर नइ मानिहों?

- आनाकानी तो नइ करबे?

- अइसे काबर सोचे हस, मोर मन में भुस-भुस जाथे, तोर सवाल अउ मांग कुकुर

के पूछी बरोबर टेङ्गा लागत हे?

- जोर से खिलखिलाके हांस भरथे। फेर थोरिक रुक के

कहिथे- तोर मगज में अइसे का बात कइसे उगो के मंय टेङ्गी

(बिच्छी) असन टेङ्गा मांग अउ सवाल करे बर बइटे ही?

- मंय जानत हैं गोसइन मन के रूप अउ चाल ला, कब कइसे

पाला बदल लेथे तेला, ब्रम्हा नइ जानय।

- अच्छ जी, तोर केहे के मतलब हे के हमन शातिर होथन?

- मंय अइसे कहां काहत हैं, तोर का मांग हे, विचार हे तउन ला बता, दुनियाभर

के गोठ ला छोड़।

- कइसे छोड़ दे हैं, राजा जब तंय डमरू बजा दे हय, तिसुल लहरा दे हस,

तब सही बात काहे, तेला बता जउन नारी मन के हिरदे में होथे?

- तब सुन, तोर असन कैकेयी हा

लुढ़्ढार के अयोध्या के चक्रवर्ती राजा

दइसथ करा ले दू ठन वर मांगिस। अउ ओहर दे दीस, का हाल होइस ओकर?



परमानंद वर्मा

हाथ गोड जुगो। माथा धरलिस, सोचे

लागिसे अब वचन तो दे परे हे। धरम संकट

खड़ा होगे

अब !

भोजराज अब सोचथे- का करे जाय,

ये गोसइन तो मोला बाते-बात में फंसा लिस।

फंसगे- हिमरा के जाल में जइसे मछरी फंस

जथे।

छटपटाय लगिस। गोसइन के बात ला

मानत हैं तब ददा-दाई मन का कइहीं?

तोला अउ कोनो नइ मिलिस रे, तोर सारी

भर एक इन हे, बहू बनाय के लइक?

ओमन मना कर दिही तब का होही?

गोसइन आथे, पूछथे- कइसे का सोचत

गोसइन के छतरंगी चाल

- अच्छ ये कथा हे?
- अउ सुन, सीताजी हा पंचवटी करा सोन के नकली हिरण ला जात देखिस तब ओला कहिथे- मोला ओकर मृगछला चाही। राम समझाइस नइ मानिस। ओकर आधू का होइस ओ सबो कथा ला तंय जानत हस।

- मोला लगथे चित्रकूट के घाट में नइते कुंभ में कोनो शिवपुरान, रामकथा, गीता भागवत सुनत हैं। धन्य हो कथा वाचक महाराज, धन्य हो।

- ना मंय अयोध्या के महाराजा दइसथ के महारानी कैकेयी हैं अउ न भगवान रामचंद्र के अर्धांगिनी अउ जनक नंदिनी जानकी हैं। मंय छत्तीसगढ़ के साधारन परिवार के किसान के अर्धांगिनी हैं, ओकर ले जादा कुछ नहीं। इही मोर पहचान हे। मोर मात्तिक ला पायलगी।

गोसइयां से जब कोनो बड़े काम कराना होथे तब गोसइन मन अइसे लुढ़्ढारत बात में लेवना (मक्खन) डार के, मिसरी घोर के गुरतुर गुरतुर गोठियाही तब झन पूछ... नहीं तो कोनो मरद बोले नइ सकय, मोहा जथे,मेडवा असन बन जाथे अउ ओकर हां में हां मिला देथे।

तब गोसइन के बात में मोकाय किसान भोजराज ओला कहिथे- बोल देवी, मांग तोला का चाही?

कोन गोसइन होही, जब देख लेथे बाजी ओकर हाथ में आगे हे तहां ले थोरको देरी नइ करय। तब गोसइन कहिथे- मोर बहिनी कलावती ल तोर भाई संग बिहाव कर लेतेव,ओला मोर देवरानी बनाय के साथ हे ! अतकला ला सुनिस तहा ले भोजराज सुकुरदुम होगे,ओकर

हाथ गोड जुगो। माथा धरलिस, सोचे लागिसे अब वचन तो दे परे हे। धरम संकट खड़ा होगे

अब !
भोजराज अब सोचथे- का करे जाय, ये गोसइन तो मोला बाते-बात में फंसा लिस। फंसगे- हिमरा के जाल में जइसे मछरी फंस जथे।

छटपटाय लगिस। गोसइन के बात ला मानत हैं तब ददा-दाई मन का कइहीं? तोला अउ कोनो नइ मिलिस रे, तोर सारी भर एक इन हे, बहू बनाय के लइक? ओमन मना कर दिही तब का होही? गोसइन आथे, पूछथे- कइसे का सोचत

हस जी, चेहरा थोकन उतरे असन लगत हे?

भोजराज बात बनावत लड़बड़ाय असन बोलथे- नहीं रे कांही नइ सोचत हैं?

- नहीं कुछ बात तो हे?

- नहीं कुछ बात नइहे काहत हैं ना?

अतक किहिंस तेकर बाद चक्कर खाके गिर

गे।

गोसइन धरा-पसरा लोटा में पानी धर के आथे अउ गोसइयां के मुड़ी में पानी छँटा

मात, माथा ला ठेकना शुरू करथे।

बेटा ला चक्कर खाके गिरे देखिस,

सुनिस तहां ले डोकरी-डोकरा आगे। पूछथे-

का होगे बहू, बेटा ला, कइसे गिरे परे हे?

बहू बात ला बनावत कहिथे, ओ काहे ना सिसू मां, काली रात के जादा दारू पी ले रिहसे। उकरे नशा में माथा गरम होगे अउ गिर परिस।

अब डोकरी-डोकरा का जानय, बहू हा

छतरंगी चाल चले हे तउन ला। ओ बात ला पांच साल के नाती दूरा हा बाद में बकर दीस।

ओहर बताथे- ददा अउ दादी, ददा हा दारू नइ पिये रिहसे। बात कुछ दूसर हे ओला चक्कर खाके गिरे के?

- दाई हा जुआ खेले हे, तेमा ददा हा

हारो हे।

- मोर बेटा तो जुआ नइ खेलय रे, तंय कइसन गोठियाथस, नाती बताथे, जइसन जुआ नहीं गा, जइसन मुमन सोचथौ।

- तब कइसन जुआ खेले हे रे?

परछी में बइटे डोकरी-डोकरा करा ओ

नाती हा पहली एती-ओती देख लीस, दाई

तो नइ देखत हे ना। कलुवा कुकुर के छोड़े ओमर कोनो नइ रिहसे। तब ओहर रात के

दाई-ददा के बीच जउन संवाद होय रिहसे तउन ला उछर दीस।

- अच्छ-अच्छ... ये बात हे बेटा,

अतके बात ला ले के भोजराज अपन माथा

खराब नइहे। कोनो बात नहीं, तोर मौसी

ला घला बहू बना के ले लाबो बेटा।

दूनो झन उकरे जाथे अउ बहू ला

कहिथे- असली बात ला छियाय के कोनो

जरूरत नइहे। तोर बहिनी ला छोटे बहू थाने

तोर देवरानी बनाय बर रइयार हन। मोर

बेटा, भोजराज ला कोनो परकार के

मानसिक ताना मारे के जरूरत नइहे। बहू

सुकुरदुम होगे, सोचे लगिस- के राज

खुलिस से खुलिस कइस। ससुर हांसत

कहिथे- बेटी- हमर नाती बड़ा चतुर सुजान

हे, पूरा राम कथा उही हर सुनाइस हे।

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	2

हलतबंद/नवप्रदेश। प्राथमिक कृषि शाख सहकारी समिति केंद्र हलतबंद में शनिवार को वार्षिक आमसभा का आयोजन बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में किया गया। बैठक में समिति के वार्षिक वित्तीयकलापों और भविष्य की योजनाओं का पर विस्तार से चर्चा की गई। आमसभा में मुख्य रूप से बैठक में समिति प्रबंधक अरुण कुमार शर्मा, मंडी अध्यक्ष दिनेश धना नरेन, नरेन, पूर्व अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, क्षेत्र के सबसे बड़े किसान कलेक्टर उर्फ

जुड़े प्रावधानों तथा गुणवत्तापूर्ण अभूषणों के संबंध में व्यापारियों के सवाल का जवाब दिया। इस दौरान सराफा कारोबारियों ने बैंक हॉलमार्किंग और लाइसेंसिंग प्रक्रिया से जुड़े कई सवाल अधिकारियों के समक्ष रखे। कार्यक्रम में डोंगराण सराफा एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष विजय चौड़िया, कोषाध्यक्ष शैलेंद्र जैन एवं सचिव वीरेंद्र सोनी सहित डोंगराण क्षेत्र के 35 से अधिक अभूषण विक्रेताओं ने सहभागिता की। सराफा व्यापारियों ने बीआईएस अधिकारियों से अभूषणों की शुद्धता, हॉलमार्किंग प्रक्रिया और लाइसेंस से संबंधित जानकारी प्राप्त की।

